ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

प्रबुधे न पुनस्कृधिः।। यजु. 4/14
हे संकल्पशक्ति! हमें फिर से प्रबुद्ध कर जगा।
O Will power ! Do awaken us again from stumber.

वर्ष 37, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 जुलाई, 2014 से रविवार 13 जुलाई, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

संसद की दीवारों के संदेश

– प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार संसद में प्रवेश करते समय संसद की सीढ़ियों पर सिर रखकर प्रणाम किया है। इससे संसद की गरिमा बहुत बढ़ गयी है। आशा है कि सांसद महानुभाव इस भावना और गरिमा का सम्मान करेंगे।

संसद भवन की दीवारों और लिफ्टों के गुम्बजों पर लिखे हुए संदेश संसद के सदस्यों, सांसदों से कुछ उम्मीद करते हैं। संसद के इन संदेशों का चयन करने वाले पूर्व राजनयिकों के प्रति मन में श्रद्धा के भाव जग उठते हैं। आज के बहुसंख्यक सांसदों के पतनशील आचरण, स्वार्थी व्यवहारों पर विचार करने से इन आदर्श संदेशों का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। संसद भवन के प्रथम द्वार से होकर जब हम केन्द्रीय सभागार के प्रांगण की ओर चलते हैं तो प्रवेश द्वार पर भारतीय संस्कृति का एक उदात्त आदर्श निम्न श्लोक में लिखा हुआ मिलता है– **"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।" (पंचतंत्रम्)** इसका अर्थ हुआ कि यह अपना और यह पराया है ऐसा विचार छोटे चित्त वालों का होता है। जो उदार चरित्रवाले होते हैं वे तो सारे विश्व को अपना परिवार समझते हैं। आज के भूमण्डलीकरण और विश्व के बाजारीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विश्व के संसाधनों की लूट के युग में ऐसे आदर्शों का महत्त्व बढ़ जाता है।

लोकसभा के विशाल सभागार में अध्यक्ष के पीठ के पीछे दीवार पर बौद्ध युग की प्रसिद्ध सूक्ति– **"धर्म चक्र – प्रवर्तनाय"** लिखा हुआ है इसका अर्थ हुआ कि सांसदों को धर्म चक्र के निर्माण के लिये प्रयत्नशील बने रहना चाहिये। इस सूक्ति को देखते हुए हम संसद के सदस्यों को पंथ निरपेक्ष होने की सलाह तो सोच सकते हैं। इससे यह सुस्पष्ट है कि हमारे संसद का आदर्श धर्म निरपेक्ष नहीं है, बल्कि सम्प्रदाय निरपेक्ष है। संसार में अनेकों पंथ हैं– शैव, शाक्त, वैष्णव आदि हिन्दुओं के सम्प्रदाय है, शिया, सुन्नी, आदि मुसलमानों के सम्प्रदाय है, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट आदि ईसाइयों के सम्प्रदाय हैं, जैन, बौद्ध, पारसी, सिख सभी सम्प्रदायों में ही परिगणित है। इनके प्रति संसद का निरपेक्ष समान भाव होना ही इष्ट है।

धर्म तो मानव समाज को, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को धारण पालन करता है **"धारणाद् धर्म मित्याहुः"** कहा गया है। जिस आचरण से सम्पूर्ण विश्व मनुष्य पशु, पक्षी, प्राकृतिक संसाधन सभी का धारण, पोषण हो वह धर्म कहलाता है। मनु महाराज ने कहाहै – **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयम् शौच विन्द्रिय निग्रहः। धीर विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणं।।** इसी के साथ अहिंसा और जोड़ देने से धर्म के ग्यारह लक्षण हो जाते हैं। राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर धर्म की व्याख्या लिखी हुई है। **अहिंसा परमो धर्मः**। राष्ट्रपिता गांधीजीकी सभाओं में गाया जाता था– वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीरपराई जाने रे। आज के युग में हमारी संसद में जोर जबर्दस्ती से अपनी बात मनवाने का प्रयास होता है।

संसद की दीवरों पर जहां भी भारत का राजचिह्न अंकित है वहाँ सर्वत्र लिखा हुआ है – **"सत्यमेव जयते"** इसका भाव हुआ कि सांसदों का कर्त्तव्य है कि वे सत्य की जीत की चेष्टा करें। यह पूरा वाक्य है– **"सत्यमेव जयते नानृतम्"**, ऋत् का अर्थ होता है उचित अनृत का अर्थ होता है अनुचित। भाव यह हुआ किजो सत्य अनृत है, अनुचित है उसकी जीत की चेष्टा नहीं होनी चाहिए। उदाहरण के लिये स्कैण्डल होते है। घूस का बाजार सर्वत्र गर्म होता है

– शेष पृष्ठ 5 पर

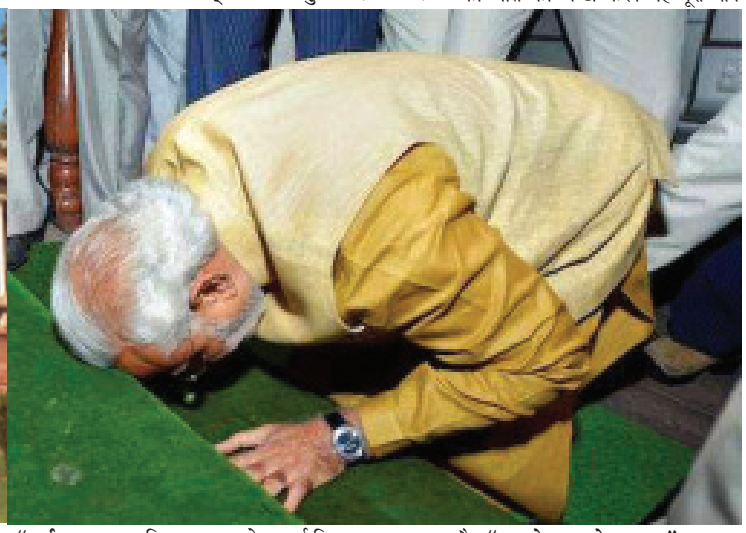

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

8वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

रविवार 20 जुलाई, 2014 प्रातः 10 बजे से

आर्यसमाज मन्दिर, ए-37 देवेन्द्र मार्ग, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 (निकट मोती नगर मैट्रो स्टेशन) मो. 9540041414

पंजीकरण कराने वाले सभी प्रतिभागी माता-पिता के साथ पहुंचें

विशेष नोट : सम्मेलन स्थल पर भी तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था होगी। तत्काल पंजीकरण वालों के नाम बाद में विवरणी पुस्तिका में सम्मिलित हो सकेंगे। 9वां परिचय सम्मेलन 28 सितम्बर, 2014 को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.) में आयेजित होगा, उसके लिए भी पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी। निवेदक : अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

वेद-स्वाध्याय

द्वेष निवारक प्रभु

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत। स नः पर्षदति द्विषः। ऋ. 10/187/5

अर्थ—*(यः)* जो *(अस्य)* इस *(रजसः)* रजोगुण से *(परे)* परे *(शुक्रः)* शुद्ध *(अग्निः)* दोषों को भस्म करने वाला परमात्मा देव *(अजायत)* ध्यान में प्रकट हुआ है *(सः)* वह *(नः)* हमें *(द्विषः)* द्वेषवृत्तियों कष्टों से *(अति पर्षत्)* पार करे।

जो इन्द्रियों के प्रतिकूल हो उसे दुःख कहते हैं। **दुःखानुशयी द्वेषः** (योग० २.८) दुःख के देने वाले साधनों के प्रति जो घृणा भाव अथवा द्वेष रूप संस्कार होता है उसे द्वेष कहते हैं। स्वस्थ मन में सत्त्व गुण की प्रधानता रहती है। जब रजोगुण और तमोगुण की वृद्धि हो जाती है तब काम, क्रोधादि विकार उत्पन्न होकर मन को अस्वस्थ बना देते हैं।

सात्विक मन—दयालुता, परस्पर बांट कर वस्तुओं का उपभोग करना, सहनशीलता, सत्यभाषण, आस्तिकभाव, ज्ञान-बुद्धि-मेधा से सम्पन्न, धैर्य, स्मृति, विषय भोगों में अनासक्ति। सात्विक मन स्वभाव से ही निर्दोष तथा विकार रहित होता है। मन के अन्य दो विकार स्वभावतः ही विकृति वाले होते हैं।

राजसिक मन—निरन्तर दुःखी रहना, असन्तोष, किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये निरन्तर भ्रमण या प्रयत्न करना, धैर्य का अभाव, अहंकार, असत्य भाषण, क्रूरता, दम्भ, गर्व, आनन्द की इच्छा, काम तथा क्रोधादि राजसिक मन के लक्षण हैं।

तामसिक मन—अत्यधिक निराशा, नास्तिक-बुद्धि, अधर्म का आचरण, मन्दबुद्धिता, आत्म विषयक अज्ञान, अपकार के भाव, पापवृत्ति, अन्याय में प्रवृति और निद्रादि तामसिक मन के लक्षण हैं।

रजोगुण और तमोगुण दोषों की अधिकता से मन अस्वस्थ हो जाता है और दो विकार उत्पन्न होते हैं—१. इच्छा, २. द्वेष। किसी पदार्थ की अत्यधिक कामना को इच्छा और पदार्थ विशेष के प्रति अरुचि होना द्वेष कहलाता है।

रजोगुण, तमोगुण और राग-द्वेष को जान लेने के पश्चात् आइये अब मन्त्र पर दृष्टिपात करें—

ध्यान, समाधि में बैठे हुये इस योगी को **यो अस्य पारे रजसः** जो इन लोक-लोकान्तरों से पार पृथक् विराज रहा है, उस शुभ्र गुण अग्नि परमेश्वर का जो साक्षात्कार हुआ है अथवा रजोगुण, तमोगुण के क्षीण हो जाने से जो सत्त्वगुण का प्रादुर्भाव योगी की बुद्धि में हुआ है और शुद्ध, ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति हुई है, वह **स नः पर्षदति द्विषः** हमें सारे राग-द्वेषों से पार करे। इस मन्त्र में तीन बातें कही हैं—

१. यो अस्य पारे रजसः सर्वप्रथम साधक को रजोगुण अर्थात् चित्तवृत्ति-निरोध का उपाय करना चाहिये क्योंकि योग का प्रारम्भ चित्तवृत्ति निरोध से ही होता है और **तदा द्रष्टुःस्वरूपेऽवस्थानम्** (योग० १.३) द्रष्टा आत्मा की अपने और परमात्मा के स्वरूप में स्थिति होती है। **अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः** (योग० २.१२) अभ्यास और वैराग्य से चित्तवृत्ति का निरोध होता है। चित्तनाम वाली नदी दोनों ओर बहती है। वह कल्याण की ओर बहती है और पाप के लिये भी बहती है। इस पर वैराग्य का बांध लगा कर अभ्यास द्वारा उसके प्रवाह को कल्याण सागर की ओर खोलना चाहिये। चित्तवृत्ति को स्थिर करने के लिये योग के अङ्गों का अनुष्ठान करना अभ्यास और देखे सुने सांसारिक विषयों से विरक्त होना वैराग्य है। अभ्यास-वैराग्य से ध्यान, समाधि की शीघ्र प्राप्ति और सम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था में ऋतम्भरा प्रज्ञा का आविर्भाव होता है। यह प्रज्ञा वस्तु का सीधा ही ज्ञान प्राप्त करा देती है।

२. सम्प्रज्ञात समाधि से आगे असम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था में **शुक्रो अग्निरजायत** शुद्ध स्वरूप परमात्मा अग्निदेव प्रकट होता है जो सूर्य से भी अधिक प्रकाशित हो रहा है। यह अग्नि हृदय से प्रकट होता है।

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे। संप्रेद्धो अग्निर्जिह्वाभिरुदेतु हृदयादधि॥ अथर्व० ६.७६.१

हमारा शरीर एक यज्ञशाला है। जिसमें आत्मा यजमान है। इन्द्रियाँ ऋत्विक् हैं। जो हृदय-रूपी यज्ञकुण्ड में आहुतियाँ डाल रहे हैं और वहाँ ब्रह्म ज्ञान की अग्नि प्रज्वलित हो रही है।

ब्रह्म का स्वरूप—समाधि अवस्था में उपासक को ब्रह्म का स्वरूप ऐसा दिखाई पड़ता है जैसे केसर से रंगा वस्त्र हो। वीर-बहूटी की लालिमा की भाँति, अग्नि की ज्वाला के सदृश, विद्युत् की लपट की भाँति उसके दर्शन होते हैं। (बृहदा० २.३)

नीहारधूमार्कानिलानलानां खद्योत विद्युत् स्फटिक शशीनाम्। एतानि रूपाणि पुरःसराणिब्रह्मण्यभि व्यक्ति कराणि योगे॥ श्वेता०उप० २.११

योगी को ध्यान के समय कुहरा-सा, धुआं, सूर्य, वायु, अग्नि, जुगनू, बिजली, स्फटिक, चन्द्रमा इनकी ज्योतियाँ दिखलाई देती हैं। ये चिह्न योग में ब्रह्म के दर्शन होने वाले हैं, इसकी अभिव्यक्ति करते हैं।

विधूम इव सम्रर्चिरादित्य इव रश्मिमान्। वैद्युतोऽग्निरिवाकाशे दृश्यते ऽऽत्मा तथात्मनि॥ महा०शा० ३०६.२०

ध्याननिष्ठ योगी को अपने हृदय में उसी प्रकार परमात्मा का दर्शन होता है जैसे धूम-रहित अग्नि का, किरण मालाओं से मण्डित सूर्य का तथा जैसे आकाश में बिजली चमक रही हो।

३. ब्रह्म का साक्षात् हो जाने पर **स नः पर्षदति द्विषः** वह परमात्मा हमारे राग-द्वेषादि सभी क्लेशों को दूर कर देता है। मुण्डकोपनिषद् कहती है—

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥ मुण्डको० २.८

हृदय की सब राग, द्वेष, संशय, अविद्यादि गांठें खुल जाती है और सब संशय निवृत्त हो जाते हैं। उसके कर्म क्षीण, दग्धबीज हो जाते हैं जब उसका दर्शन हो जाता है।

ऐसे योगी के हृदय में सबके प्रति प्रेम, करुणा, मैत्री का सागर उमड़ पड़ता है। उसके सम्पर्क में आने वाले श्रद्धालु जनों के भी हृदय शुद्ध हो जाते हैं। अनेक दुर्दान्त दस्यु इन महात्माओं के सत्संग से दस्यु कर्म को छोड़ महात्मा बन गये हैं। तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है—

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥ - *क्रमशः*

वेद मन्त्र भावार्थ यजुर्वेद 34/35

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता। आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भंग भक्षीत्याह।।

पदार्थः- हे मनुष्यों! (**प्रातः**) पाँच घड़ी रात्रि रहे (**जितम्**) जयशील परमात्मा को अथवा (**प्रातर्जितम्**) प्रातः काल ही उत्तमता से प्राप्त होने के योग्य को (**भगम्**) ऐश्वर्य के दाता ईश्वर को (**अदितेः**) अन्तरिक्ष के (**उग्रं पुत्रम्**) तेजस्वी पुत्ररूप सूर्य की उत्पत्ति करने हारे को और (**यः**) जो कि सूर्यादि लोकों का (**विधर्त्ता**) विशेष करके धारण करने हारा (**आध्रः**) सब ओर से धारण कर्त्ता अथवा जो सबके द्वारा सब ओर से धारण किया जाता है अथवा अपुत्र का पुत्र या असहाय का रक्षक या न्यायादि में तृप्ति न करने वाले का पुत्र (**यं चित्**) जिस किसी को भी (**मन्यमानः**) जानने हारा परमेश्वर है। (**तुरश्चित्**) दुष्टों को भी दण्ड दाता या शीघ्रकारी भी और (**राजा**) सब का प्रकाशक है, (**यम्**) जिस (**भगम्**) भजनीयस्वरूप को (**चित्**) भी (**भक्षीति**) इस प्रकार सेवन करता हूँ, और इसी प्रकार भगवान् परमेश्वर सब को (**आह**) उपदेश करता है कि तुम जो मैं सूर्यादि जगत् का बनाने और धारण करने हारा हूँ, उसमें मेरी उपासना किया करो और मेरी आज्ञा में चला करों, इससे (**वयम्**) हम लोग उस की (**हुवेम**) स्तुति करते हैं। (स.वि.+ऋषि दया. कृत वेदभाष्य)

भावार्थ (1):- हे मनुष्यों! तुम लोगों को सदा प्रातः काल से लेकर सोते समय तक यथाशक्ति सामर्थ्य से विद्या और पुरूषार्थ से ऐश्वर्य की उन्नति कर आनन्द भोगना और दरिद्रों के लिए सुख देना चाहिये यह ईश्वर ने कहा है।

(ऋ.दया. कृत यजु. भाष्य 34/35)

भावार्थ (2):- मनुष्यों को चाहिये कि प्रातः समय उठकर सब के आधार परमेश्वर का ध्यान करके सब करने योग्य कामों को नाना प्रकार से चिन्तन कर धर्म और पुरूषार्थ से पाये हुए ऐश्वर्य को भोगें व भोगावें यह ईश्वर उपदेश देता है।

(ऋ.दया.कृत. ऋग्वेदभाष्य 7/41/2)

टिप्पणीः- (क) ईश्वर जयशील है जीतने के स्वभाव वाला है कभी हारता नहीं है। मनुष्य अल्पज्ञ अल्पसामर्थ्य वाला होने से काम, क्रोध, लोभ, मोहादि आन्तरिक शत्रुओं से परास्त होकर कामी, क्रोधी, लोभी हो जाता है परन्तु ईश्वर सर्वदा विद्यायुक्त रहने के कारण कभी काम, क्रोध, लोभादि के वश में नहीं होता। मनुष्य के बाह्य शत्रु वे मनुष्य हैं जो उससे द्वेष करते हैं, उसके अच्छे कार्यो का विरोध करते हैं, उनमें बाधा डालते हैं। कुछ मनुष्य इन बाह्य शत्रुओं से परास्त होकर अच्छे कार्यो को करना छोड़ देते हैं व जैसा उसके शत्रु कहते मानते हैं उसका समर्थन करना प्रारम्भ कर देते हैं। ईश्वर के शत्रु हैं जो उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते, जो उसके सर्वहितकारक कार्यो में बाधा डालते हैं अर्थात् पापी, दुष्टजन। जब संसार में पापी, हिंसक, दुष्टों को धनादि ऐश्वर्य, मान प्रतिष्ठादि प्राप्त होती है तो लगता है कि वे जीत रहे हैं, ईश्वर का उनके ऊपर कोई वश नहीं चल रहा। परन्तु वस्तुतः सुख-दुख का सम्बन्ध आत्मा में होता है। उनके आत्मा में अविद्या, अविवेक होने के कारण बाह्य साधनों से सुसज्जित होने पर भी वे दुःखी, अशान्त, चचंल, तनावयुक्त, भयभीत, असहनशील रहते हैं, उनकी आत्मा में आनन्द नहीं होता।

मनुस्मृति में कहा है- **अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति। ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति।।**

(**मनु.**)-इसका अर्थ सत्यार्थ प्रकाश में ऐसे दिया है कि - जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बंध को तोड़ जल चारों ओर फैल जाता है वैसे) मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड

- शेष पृष्ट 8 पर

मैं आस्तिक क्यों हूँ?

गतांक से आगे

१. धर्म आचरण प्रधान मार्ग है जबकि मजहब ईमान या विश्वास का पर्याय है।

२. धर्म में कर्म सर्वोपरि है जबकि मजहब में विश्वास सर्वोपरि है।

३. धर्म मनुष्य के स्वभाव के अनुकूल अथवा मानवी प्रकृति का होने के कारण स्वाभाविक गुण है और इसका आधार ईश्वरीय अथवा सृष्टि नियम है। परन्तु मजहब मनुष्यकृत होने से अप्राकृतिक अथवा अस्वाभाविक है। इसी कारण से धर्म एक हैं और मज़हब अनेक व भिन्न भिन्न हैं। मनुष्यकृत होने के कारण मत-मतान्तर आपस में विरोधी होते हैं जबकि धर्म का एक होने के कारण कोई विरोध नहीं है।

४. धर्म के जो लक्षण मनु महाराज ने बतलाये हैं वह समस्त मानव जाति के लिए मान्य हैं एवं कोई भी सभ्य मनुष्य उसका विरोध नहीं कर सकता। मजहब या मत अनेक हैं और वे केवल उसी मत या मजहब को मानने वालों द्वारा ही स्वीकार्य होते हैं एवं अन्य द्वारा उनका विरोध होता हैं। इसलिए धर्म सर्वकालिक (सभी काल में मानने योग्य), सार्वजनिक (सभी के लिए उपयोगी), सर्वग्राह्य (सभी को ग्रहण करने योग्य) और सार्वभौमिक (सभी स्थानों पर मानने योग्य) है जबकि मत या मजहब किसी एक विशेष काल में, किन्हीं विशेष लोगो के समूह द्वारा, किसी विशेष स्थान पर मानने योग्य ही बन पाता है । कुछ बातें सभी मजहबों या मतों में धर्म के अंश के रूप में हैं इसलिए उन मजहबों का कुछ मान बना हुआ हैं।

५. धर्म सदाचार रूप है अत: धर्मात्मा होने के लिये सदाचारी होना अनिवार्य है। परन्तु मजहबी अथवा मत का सदस्य होने के लिए सदाचारी होना अनिवार्य नहीं है। अर्थात् जिस तरह धर्म के साथ सदाचार का नित्य सम्बन्ध है उस तरह मजहब के साथ सदाचार का कोई सम्बन्ध नहीं है। किसी भी मजहब का अनुयायी न होने पर भी कोई भी व्यक्ति धर्मात्मा (सदाचारी) बन सकता है जबकि अधर्मी व्यक्ति बिना सदाचार के भी किसी भी मत का सदस्य बन सकता है। उसके लिए केवल मत के मंतव्यों पर ईमान अथवा विश्वास लाना आवश्यक है। जैसे उदाहरण के लिए कोई कितना ही सच्चा ईश्वर उपासक और उच्च कोटि का सदाचारी ही क्यों न हो वह जब तक हजरत ईसा और बाइबिल अथवा हजरत मोहम्मद और कुरान शरीफ पर ईमान नहीं लायेगा वह तब तक ईसाई अथवा मुस्लमान नहीं बन सकता जबकि कोई व्यक्ति केवल सदाचार से धार्मिक बन सकता है।

६. धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है अथवा धर्म अर्थात् धार्मिक गुणों और कर्मों के धारण करने से ही मनुष्य मनुष्यत्व को प्राप्त करके मनुष्य कहलाने का अधिकारी बनता है। दूसरे शब्दों में धर्म और मनुष्यत्व पर्याय है। क्योंकि धर्म को धारण करना ही मनुष्यत्व है। कहा भी गया हैं-खाना, पीना, सोना, संतान उत्पन्न करना जैसे कर्म मनुष्यों और पशुओं के एक समान है। केवल धर्म ही मनुष्यों में विशेष है जोकि मनुष्य को मनुष्य बनाता है। धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान है। परन्तु मजहब मनुष्य को केवल पन्थाई या मजहबी और अन्धविश्वासी बनाता है। दूसरे शब्दों में मजहब अथवा मत पर ईमान लाने से मनुष्य उस मजहब का अनुयाई अथवा ईसाई अथवा मुस्लमान बनता है न कि सदाचारी या धर्मात्मा बनता है।

७. धर्म मनुष्य को ईश्वर से सीधा सम्बन्ध ा जोड़ता हैं और मोक्ष प्राप्ति निमित धर्मात्मा अथवा सदाचारी बनना अनिवार्य बतलाता है परन्तु मजहब मुक्ति के लिए व्यक्ति को सर्वप्रथम तो उसके प्रवर्तक से जोड़ता है अथवा उस मत की मान्यताओं से जोड़ना अनिवार्य बतलाता है। मुक्ति के लिए सदाचार से अधिक आवश्यक उस मजहब की मान्यताओं का पालन बतलाता हैं। उदाहारण के लिए अल्लाह और मुहम्मद साहिब को उनके अंतिम पैगम्बर मानने वाले जन्नत जायेंगे चाहे वे कितने भी व्यभिचारी अथवा पापी हों जबकि गैर मुसलमान चाहे कितना भी धर्मात्मा अथवा सदाचारी क्यों न हो वह दोजख अर्थात् नर्क की आग में अवश्य जलेगा क्योंकि वह कुरान के ईश्वर अल्लाह और रसूल पर अपना विश्वास नहीं लाया है।

८. धर्म में बाह्य (बाहर) के चिह्नों का कोई स्थान नहीं है क्योंकि धर्म लिंगात्मक नहीं है -न लिंगम धर्म कारणं अर्थात् लिंग (बाहरी चिह्न) धर्म का कारण नहीं है परन्तु मजहब के लिए बाहरी चिह्नों का रखना अनिवार्य है जैसे एक मुस्लमान के लिए जालीदार टोपी और दाड़ी रखना अनिवार्य है।

९. धर्म मनुष्य को पुरुषार्थी बनाता हैं क्योंकि वह ज्ञानपूर्वक सत्य आचरण से ही अभ्युदय और मोक्ष प्राप्ति की शिक्षा देता हैं परन्तु मजहब मनुष्य को आलस्य का पाठ सिखाता है क्योंकि मजहब के मंतव्यों मात्र को मानने भर से ही मुक्ति का होना उसमें सिखाया जाता है। धार्मिक व्यक्ति को अपने आचरण में अपने व्यवहार में सात्विकता का पालन करना पड़ता है जबकि मजहबी व्यक्ति को यह सिखाया जाता है कि मत की मान्यताओं को मानने से तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। धर्म व्यक्ति को कर्मशील बनाता है जबकि मत उसे आलसी एवं अंधविश्वासी बनाता है।

१०. धर्म मनुष्य को ईश्वर से सीधा सम्बन्ध जोड़कर मनुष्य को स्वतंत्र और आत्म स्वालम्बी बनाता है क्योंकि वह ईश्वर और मनुष्य के बीच में किसी भी मध्यस्थ या एजेंट की आवश्यकता को नहीं बताता है । परन्तु मत या मजहब मनुष्य को परतंत्र और दूसरों पर आश्रित बनाता है क्योंकि वह मजहब के प्रवर्तक की सिफारिश के बिना मुक्ति का मिलना नहीं मानता है। मत व्यक्ति को एक प्रकार से मानसिक गुलाम बनाता है जबकि धर्म उसे मानसिक गुलामी से स्वतंत्र करता है।

११. धर्म दूसरों के हितों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक देना सिखाता है जबकि मजहब अपने हित के लिए अन्य मनुष्यों और पशु आदि के प्राण हरने के लिए हिंसा रुपी कुरबानी का आदेश देता है। विश्व में चारों और फैला आतंकवाद एवं ईद के दिन निरीह पशुओं की कुरबानी अथवा कुछ हिन्दू मंदिरों में बलि इस बात का प्रबल प्रमाण है।

१२. धर्म मनुष्य को सभी प्राणी मात्र से प्रेम करना सिखाता है जबकि मजहब मनुष्य को प्राणियों का माँसाहार करने और दूसरे मजहब वालों से द्वेष सिखाता है।

१३. धर्म मनुष्य जाति को मनुष्यत्व के नाते से एक प्रकार के सार्वजनिक आचारों और विचारों द्वारा एक केंद्र पर केन्द्रित करके भेदभाव और विरोध को मिटाता है तथा एकता का पाठ पढ़ाता है। परन्तु मजहब अपने भिन्न भिन्न मंतव्यों और कर्त्तव्यों के कारण अपने पृथक-पृथक जत्थे बनाकर भेदभाव और विरोध को बढ़ाते और एकता को मिटाते हैं।

१४. धर्म एक मात्र ईश्वर की पूजा बतलाता है जबकि मजहब ईश्वर से भिन्न मत प्रवर्तक /गुरु/ मनुष्य आदि की पूजा बतलाकर अन्धविश्वास फैलाते है।

धर्म और मजहब के अंतर को ठीक प्रकार से समझ लेने पर मनुष्य अपने चिंतन मनन से कल्याणकारी कार्यों को करता है, उनके फल को संचित करता है एवं उससे अन्य लोगों का परोपकार करता है इसे ही पुरुषार्थ कहते है। इसलिए धर्म के पालन में सभी का कल्याण है और मत अथवा मजहब के पालन से सभी का अहित है। ईश्वर में विश्वास अर्थात् आस्तिकता के कारण व्यक्ति धार्मिक बनता है एवं मजहब अथवा मत के कारण अधार्मिक बनता है। जितने भी तर्क आस्तिकता के विरुद्ध नास्तिक लोग देते हैं वे सभी तर्क मजहब या मत पर लागू होते हैं। धर्म की सही परिभाषा एवं उसके अनुसार आचरण करने पर समाज का हित होता है।

4. नास्तिक बनने के क्या कारण हैं?

समाधान- नास्तिक बनने के प्रमुख कारण हैं - १. ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव से अनभिज्ञता। २. धर्म के नाम पर अन्धविश्वास जिनका मूल मत मतान्तर की संकीर्ण सोच है। ३. विज्ञान द्वारा करी गई कुछ भौतिक प्रगति को देखकर अभिमान का होना। ४. धर्म के नाम पर दंगे, युद्ध, उपद्रव आदि ईश्वर के नाम पर अत्याचार, अज्ञानता को बढ़ावा देना, चमत्कार आदि में विश्वास दिलाना, ईश्वर को एकदेशीय अर्थात् एक स्थान जैसे मंदिर, मस्जिद आदि अथवा चौथे अथवा सातवें आसमान तक सीमित करना, ईश्वर द्वारा अवतार लेकर विभिन्न लीला करना, एक के स्थान पर अनेक ईश्वर होना, निराकार के स्थान पर साकार ईश्वर होना, ईश्वर द्वारा अज्ञानता का प्रदर्शन करना आदि कुछ कारण हैं जो एक निष्पक्ष व्यक्ति को भी यह सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि क्या ईश्वर का अस्तित्व है कि नहीं अथवा ईश्वर मनुष्य के मस्तिष्क की कल्पना मात्र है। उदाहरण के तौर पर हिन्दू समाज में शूद्रों को मंदिरों में प्रवेश की मनाही है एवं अगर कोई शूद्र मंदिर में प्रवेश कर भी जाये तो उसे दंड दिया जाता है और मंदिर को पवित्र करने का ढोंग किया जाता है। यह सब पाखंड किया तो ईश्वर के नाम पर जाता है मगर इसके पीछे मूल कारण मनुष्य का स्वार्थ है न कि ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर गुण, कर्म और स्वभाव से दयालु एवं न्यायकारी है इसलिए वह किसी भी प्राणिमात्र में कोई भेदभाव नहीं करता। ईश्वर गुणों से सर्वव्यापक एवं निराकार है अर्थात् सभी स्थानों पर है और आकार रहित भी है। जब ईश्वर सभी स्थानों पर है तो फिर उन्हें केवल मंदिर में या क्षीर सागर पर या कैलाश पर या चौथे आसमान पर या सातवें आसमान पर ही क्यों मानें। इससे यही सिद्ध होता है की मनुष्य ने अपनी कल्पना से पहले ईश्वर को निराकार से साकार किया, उन्हें सर्वदेशीय अर्थात् सभी स्थानों पर निवास करने वाला से एकदेशीय अर्थात् एक स्थान पर सीमित कर दिया। फिर सीमित कर कुछ मनुष्यों ने अपने आपको ईश्वर का दूत, ईश्वर और आपके बीच मध्यस्थ, ईश्वर तक आपकी बात पहुँचने वाला बना डाला। यह जितना भी प्रपंच ईश्वर के नाम पर रचा गया यह इसीलिए हुआ क्योंकि हम ईश्वर के निराकार गुण से परिचित नहीं हैं। अपनी अंतरात्मा के भीतर निराकार एवं सर्वव्यापक ईश्वर को मानने से न मंदिर की, न मूर्ति की, न मध्यस्थ की, न दूत की, न अवतार की, न पैगम्बर की और न ही किसी मसीहा की आवश्यकता है।

ईश्वर के नाम पर सबसे अधिक भ्रांतियाँ मध्यस्थ बनने वाले लोगो ने फैलाई हैं चाहे वह छुआ छूत का समर्थन करने वाले एवं शूद्रों को मंदिरों में प्रवेश न देने वाले हिन्दू धर्म के पुजारी हो, चाहे इस्लाम से सम्बन्ध रखने वाले मौलवी-मौलाना हो जिनके उकसाने के कारण इतिहास में मुस्लिम हमलावरों ने मानव जाति पर धर्म के नाम पर ऐसा कोई भी अत्याचार नहीं था जो उन्होंने नहीं किया था, चाहे ईसाई समाज से सम्बंधित पोप आदि हो जिन्होंने चर्च के नाम पर हजारों लोगो को जिन्दा जला दिया एवं निरीह जनता पर अनेक अत्याचार किये। न यह मध्यस्थ होते न ईश्वर के नाम पर इतने अत्याचार होते और न ही इस अत्याचार के फलस्वरूप प्रतिक्रिया रूप में विश्व के एक बड़े समूह को ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार कर नास्तिकता का समर्थन करना पड़ता। सत्य यह है कि यह प्रतिक्रिया इस व्याधि का समाधान नहीं थी अपितु इसने रोग को और अधिक बढ़ा दिया। आस्तिक व्यक्ति यथार्थ में ईश्वर विश्वासी होने से पापकर्म में लीन होने से बचता था। दोष मध्यस्थों का था जो आस्तिकों का गलत मार्गदर्शन करते थे। मगर ईश्वर को त्याग देने से पाप-पुण्य का भेद मिट गया और पाप कर्म अधिक बढ़ता गया, नैतिक मूल्यों को ताक पर रख दिया गया एवं इससे विश्व अशांति और अराजकता का घर बन गया।

ईश्वर में अविश्वास का एक बड़ा कारण अन्धविश्वास हैं। सामान्य जन विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों में लिप्त हैं और उन अंधविश्वासों का नास्तिक लोग कारण ईश्वर को बताते हैं। सत्य यह है कि ईश्वर ज्ञान के प्रदाता हैं। अज्ञान को बढ़ावा देने का मुख्य कारण मनुष्य का स्वार्थ है। अपनी आजीविका, अपनी पदवी, अपने नाम को सिद्ध करने के लिए अनेक धर्म गुरु अपने अपने ढंग से अपनी अपनी दुकान चलाते हैं। कोई झाड़-फूंक से, कोई गुरुमंत्र से, कोई गुरु के नाम स्मरण से, कोई गुरु की आरती से, कोई गुरु की समाधि आदि से जीवन के सभी दुखों का दूर होना बताता हैं, कोई गंडा-तावीज़ पहनने से आवश्यकताओं की पूर्ति बताता है, कुछ लोग और आगे बढ़कर अंधे हो जाते हैं और कोई कोई निस्संतान संतान प्राप्ति के लिए पड़ोसी के बच्चे की नरबलि देने तक से नहीं चूकता है। विडंबना यह है कि इन मूर्खों के क्रियाकलापों को दिखा-दिखाकर अपने आपको तर्कशील कहने वाले लोग नास्तिकता को बढ़ावा देते हैं। कोई भी अन्धविश्वास वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध नहीं हो सकता इसलिए नास्तिकता को प्रोत्साहन वालों द्वारा विज्ञान का सहारा लेकर नास्तिकता का प्रचार करना भी एक प्रकार से अन- धविश्वास को मिटाने के स्थान पर एक और अन्धविश्वास को बढ़ावा देना ही है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

यात्रा वृतान्त
आबू धाबी (यू.ए.ई.)

खाड़ी देशों की यात्रा एवं प्रचार कार्य

- आचार्य ज्ञानेश्वरार्य
27 जून, 2014

अनेक आर्य सज्जनों के आमन्त्रण पर 16 जून 14 को यहां पहुंचा खाड़ी देशों की यह मेरी दूसरी यात्रा है। यहां मैं आर्य परिवारों को सांख्य दर्शन का अध्यापन, ध्यान, प्रवचन, शंका समाधान करता हूँ। जब भी अवकाश मिलता है, आसपास के देशों में भ्रमणार्थ जाता हूँ। दुबई देश में रहते हुए मैंने आबू धाबी, शारजाह अजमान फुजैराह, रस् अल् खैमाह आदि सात देशों की यात्रा की है। मुझे बहुत कुछ ज्ञान विज्ञान, प्रत्यक्ष देखने, सुनने, पढ़ने को मिला, यह मेरी 16वीं विदेश प्रचार यात्रा है।

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक इन खाड़ी देशों में, खारे समुद्र, रेत के टीलों, गर्म धूल भरी हवाओं के कुछ भी नहीं था। अत्यंत प्रतिकूल प्राकृतिक विपन्न जलवायु के ये कैसे जीते थे, यह कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेकिन आज वहीं पर अत्याधुनिक तथा विशाल, 50- 80-100 मंजीले आकर्षक भवनों को देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है मन में विचार होता है कि कहीं स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं, कोई जादू तो नहीं है!! वास्तविकता यह है कि यह सब; मन में किसी उद्देश्य को बनाकर उसको करने हेतु प्रबल भावना, दृढ़ संकल्प, परम पुरूषार्थ तथा घोर तपस्या का परिणाम है।

मैंने सुना कि यहां के (शेख) राजा, जब अमेरिका, यूरोप आदि देशों की यात्रा करते हुए वहां कि भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त सब प्रकार की उन्नति देखते थे तो उनके मन में यह विचार उत्पन्न होते थे कि क्या मेरे देश में ऐसे भवन, चौड़ी सड़कें, यातायात के सधन, होटल, रिसोर्ट, क्लब, बाग, बगीचे, मनोरंजन के साधन, व्यापार मण्डी, सुख-सुविधाएं बनायी जा सकती हैं, जिनके कारण लोग आकर्षित होकर आते, रहें?

बस एक दिन संकल्प कर लिया, योजनाऐं बनायीं गई, अमेरिका, यूरोप, एशिया के देशों से सम्पर्क किया, मंत्रणा हुई, अनुबन्ध हुए, लोहा, सीमेंट, पत्थर, लकड़ी, इंजीनियर, श्रमिक, आदि जिन साधनों की अपेक्षा थी, प्राप्त किये गये। कार्य प्रारंभ हो गया, शेख के मन में एक ही भावना कि कोई भी निर्माण हो, अद्भुत, अद्वितीय आकर्षक होना चाहिए। समुद्र में मीलों तक पत्थर, कंकर, रेत डालकर, पहाड़ बनाकर उन पर आकाश को छूने वाली, ऊंची भव्य इमारतें बनायी गयीं। और सुन्दर नगर बसाया गया। दूसरी तरफ भूमि में गहरी खाईयां खोदकर समुद्र में पानी को नहरों के रूप में फैला दिया गया। अन्य देशों से चट्टानों में उपजाऊ मिट्टी मंगाकर, रेत के मैदानों में बड़े-बड़े, बिछाकर, उद्यान, खेत, बगीचे, उपवन, वाटिकाएं बना दीं। जहां घास का एक तिनका नहीं उगता था वहां पर रंग-बिरंगे, फूल-फल, घास के मैदान बना दिए। बसों, रेलों, ट्रामों, भण्डारों आदि की समुचित व्यवस्था करके सर्वत्र आवागमन को सरल बना दिया।

कृत्रिम रूप से बने सभी साधन सुविधाओं से युक्त उत्तम व्यवस्था, कुशल प्रबन्ध, अनुशासन, दण्ड व्यवस्था के कारण विश्व के 200 से भी अधिक देशों के नागरिक यहां अनेक प्रकार के व्यवसायों में लगे हुए हैं। अमीरात के देश विश्व का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं पर्यटन का केन्द्र बन गया है। इन देशों के मुख्य नगरों में घूमते हैं तो यह भ्रम हो जाता है कि कहीं हम लंदन पेरिस, टोक्यो, सिंगापुर में तो नहीं हैं।

इन देशों के वैभव सम्पदा विकास उन्नति को देखकर वही प्रश्न मन में उपस्थित होता है कि ये देश अत्यन्त प्रतिकूल वातावरण, जलवायु तथा विपन्नता के होते हुए कुछ ही वर्षों में देश को स्वर्ग के समान सम्पन्न सुन्दर बना सकते हैं तो हम क्यों नहीं? जहां पर हर प्रकार प्राकृतिक सम्पदा, साधन, अनुकूलता हो। जिस देश में शिल्पकला, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, खान पान, वेशभूषा, धर्म, आचार, विचार, व्यवहार, सिद्धान्त, तथा श्रेष्ठ गौरवमयी आदर्श परम्पराऐं हजारों-लाखों वर्षों से चली आ रही है, वह उन्नत क्यों नहीं हो रहा है? हमारे देश के अधिकांश लोग और उनका जीवन दयनीय, निकृष्ट, विपन्न, घृणित तुच्छ हेय क्यों है? हम चाहते ही नही हैं चाहे तो हो सकता है।

विश्व भ्रमण करने के पश्चात् मेरी समझ में यही आया है कि हमने उन्नति की सीमा व्यक्ति या परिवार तक बना ली है। हमारे नगर, राज्य, राष्ट्र का नाम विश्व में हो, हमसे लोग प्रेरणा लें, सीखें अनुकरण करें, यहां आवे हमारा सम्मान करें ये विचार कभी भी मन में उठते नहीं हैं तो कार्य क्या होगा। हे देव हमारे देश-वासियों की दयनीय, दशा से उबर कर, सम्पन्न बनने की प्रेरणा आप ही प्रदान करो। हम अपनी लुप्त हुई गरिमा को पुन: जीवित करके, विश्व गुरू बनकर, "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के आपके वेद उद्घोष को साकार करें, यही प्रार्थना है स्वीकार करें।

- **वानप्रस्थ साधक आश्रम**
आर्यवन, रोजड़, पो. सागपुर, जि.-साबरकांठा (गुजरात)- 383307

सभा ने मनाया गंगा प्रसाद जी का 77वां जन्मदिवस

बिहार राज्य प्रान्तीय आर्य प्रतिधि सभा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी का जन्म दिन 8 जुलाई को था। वे अपने 77वें जन्म दिवस पर अपने परिवार एवं कार्यक्रम को विशेष रूप से छोड़कर दिल्ली पधारे हुए थे। अत: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उनका 77वां जन्म दिवस सभा कार्यालय में यज्ञ के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ आचार्य ऋषि देव जी ने सम्पन्न कराया। सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने पीत वस्त्र पहनाकर श्री गंगा प्रसाद जी का सम्मान किया। यज्ञोपरान्त सभा वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, बिहार सभा के मन्त्री रमेन्द्र गुप्ता, झारखण्ड सभा के प्रधान आर्य भारत भूषण त्रिपाठी, झारखण्ड सभा के अन्य पक्षों से पधारे बन्धुओं दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, आर्य सन्देश साप्ताहिक के सह व्यवस्थापक आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर एवं श्री एस. पी. सिंह, दिल्ली सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी ने मल्यार्पण करके श्री गंगा प्रसाद जी का सम्मान किया गया। सार्वदेशिक सभा की ओर से उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने महर्षि दयानन्द जी का सुन्दर चित्र भेंट किया। श्री गंगा प्रसाद जी ने अपने जन्म दिवस पर अपनी ओर से सभा को 5000/- रुपये की राशि दान स्वरूप भेंट की।

आस्था चैनल पर वैदिक प्रवचनों के कार्यक्रमों का प्रसारण

जुलाई 2014 प्रतिदिन रात्रि 9:30 से 10:00 बजे दूसरे दिन पुन: प्रसारण आस्था भजन चैनल पर रात्रि 8:00 से 8:30 बजे

दिनांक	कार्यक्रम/वक्ता	विषय
13जुलाई	लघु चलचित्र	नशा
14 जुलाई	प्रवचन आचार्य ज्ञानेश्वर	क्रियात्मक योगाभ्यास - 7
15 जुलाई	प्रवचन स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	ईशोपनिषद् - 7
16 जुलाई	प्रवचन आचार्य अशीष	मधुर सम्बंधों के स्वर्णिम सूत्र -7
17 जुलाई	प्रवचन डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास-7
18 जुलाई	प्रवचन आचार्य सत्यप्रकाश	पातंजल योग दर्शन-7
19 जुलाई	प्रवचन डॉ. वागीश आचार्य	सोलह संस्कार-7
20 जुलाई	लघु चलचित्र	तम्बाकू
21 जुलाई	प्रवचन आचार्य ज्ञानेश्वर	क्रियात्मक योगाभ्यास-8
22 जुलाई	प्रवचन स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	ईशोपनिषद्- भाग 8/1
23 जुलाई	प्रवचन आचार्य अशीष	मधुर सम्बंधों के स्वर्णिम सूत्र -8
24 जुलाई	प्रवचन डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास- 8
25 जुलाई	प्रवचन आचार्य सत्यप्रकाश	पातंजल योग दर्शन-8
26 जुलाई	प्रवचन डॉ. वागीश आचार्य	सोलह संस्कार -8
27 जुलाई	लघु चलचित्र	सच्चे शिव की खोज (भाग 1)
28 जुलाई	प्रवचन आचार्य ज्ञानेश्वर	क्रियात्मक योगाभ्यास -9
29 जुलाई	प्रवचन स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	ईशोपनिषद्-8/2
30 जुलाई	प्रवचन आचार्य अशीष	मधुर सम्बंधों के स्वर्णिम सूत्र -9
31 जुलाई	प्रवचन डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास- 9

विचार टी.वी. नेटवर्क द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का दैनिक प्रसारण 1 जून 2014 से हर रोज रात्रि 9:30 बजे आस्था चैनल पर आरम्भ हो गया है। इसमें अपना विज्ञापन सहयोग करने की भावना रखने वाले व्यक्ति या संस्था इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया श्री धर्मेश आर्य (कार्यकारी निदेशक) से मो. 07738070401 पर सम्पर्क करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अन्तर्गत

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसन्धान केन्द्र (वेदाश्रम)

विराट् यज्ञ एवं शिलान्यास समारोह

दिनांक	यज्ञ	शिलान्यास	प्रीतिभोज
15 अगस्त (शुक्रवार)	प्रातः 10:30 बजे	महाशय धर्मपाल जी	दोपहर : 1:30 बजे

आप सब अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर दक्षिण भारत में स्थापित होने वाले इस बहु-उद्देशीय अनुसंधान केन्द्र के शिलान्यास समारोह के साक्षी बनें। आपके वहां रहने एवं भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से की जाएगी।

जो आर्यजन समारोह में सम्मिलित होना चाहें वे तत्काल अपना रेलवे/हवाई आरक्षण करा लेवें तथा दोपहर 12 से 6 बजे के मध्य श्री एस. पी. सिंह जी मो. 9540040324 को सूचना दें ताकि आपके लिए समुचित व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

आचार्य बलदेव	प्रकाश आर्य	ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य	धर्मपाल आर्य	आचार्य एम. आर. राजेश	विवेक शिनॉय
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री	व. उप प्रधान	अध्यक्ष	संयोजक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा			कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट	

प्रथम पृष्ठ का शेष

संसद की दीवारों के संदेश

चोरी, भ्रष्टाचार होते है इसलिए उनकी सत्ता तो है पर वे अनुचित है। सांसदों का कर्त्तव्य है कि वे अनुचित का समर्थन न करें। आज के युग में हमारी संसद में उचित अनुचित का विचार किये बिना पार्टी और नेताओं के समर्थन में बहुत कुछ होता रहता है। कुछ दिनों पहले राष्ट्रमंडल के खेलों का स्कैण्डल, 2जी का मामला, कोलगेट का स्कैण्डल, सभी सत्य की निर्मम हत्या है। सत्यमेव जयते का संदेश इस तरह के आचरण को रोकता है।

राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है - **सत्यम् वद् धर्मंचर**। यह तैत्तीरयोपनिषद का वचन है। इसका सुस्पष्ट संदेश है कि संसद के सदस्य सत्य बोलें और धर्म का आचरण करें। हम यह देख रहे हैं कि धर्म के आचरण की अनुशंसा अनेक बार की गई है। राज्यसभा के एक और प्रवेश द्वार पर लिखा हुआहै- **"एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति** (ऋग्० 1/164/46)। ऋग्वेद में तो यह उक्ति परमेश्वर के सम्बन्ध में है किन्तु यहां संसद में इस उल्लेख का आशय यह समझ में आता है कि देशहित, देश की सुरक्षा, देश का बहुमुखी विकास सभी सदस्यों का सांझा सत्य है और सभी सदस्य मिलजुल कर आपसी समन्वय से इस सत्य को पाने प्रयास करें। एक और प्रवेश द्वार पर भगवत् गीता का निम्न वाक्य लिखा हुआ है- **''स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः''**(गीता-18,45) संसद का प्रत्येक सदस्य अपने-अपने कर्म का, कर्त्तव्यों का पालन करते हुए संसद के उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। आज हमारे बहुदलीय प्रजातन्त्र में राजनीतिक दल स्वदेश के स्वार्थ को भुलाकर दलीय स्वार्थों में उलझ जाते है। कई बार तो सदस्यों के आपसी नोंक-झोंक में लड़ाई हो जाती है। संसद के ये वाक्य दलीय स्वार्थों से उपर उठकर राष्ट्रीय स्वार्थ की अनुशंसा कर रहे हैं।

संसद की प्रथम लिफ्ट के गुम्बद पर महाभारत का निम्न श्लोक अंकित है-

''न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, न ते ये न वदन्ति धर्मम्। धर्मो न सो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यम् न तत् यत् छलमभ्युपैति।।'' (महाभारत)

अर्थात् वह सभा या संसद, संसद नहीं होती जिसमें वृद्ध, वरिष्ठ ज्ञान वृद्ध, अनुभव वृद्ध अर्थात् ज्ञानी और अनुभवी लोग न हों। वे वरिष्ठ वृद्ध जन भी नहीं है जिनके वक्तव्य राष्ट्रधर्म और राष्ट्रहित में न हों, राष्ट्र धर्म भी ऐसा हो जिसमें सत्य की रक्षा होती हो और सत्य भी ऐसा हो जिसमें छल-कपट भरा न हो। इस संदेश का आशय यह है। कि हमारे राष्ट्र धर्म में जितना छल-कपट कम होगा उतना ही हमारे राष्ट्र और हमारी संसद की गरिमा बढेगी ।

सभा वा नं प्रवेष्टव्या, वक्तव्यम् वा समंज्जसम्। अबुवन्, विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्मिषी।। (मनु 8/13)

यह आदेश सभासदों को उनके आचरण की गरिमा के प्रति सतर्क करता है। इस श्लोक का भावार्थ यह है कि सभासद सभा में प्रवेश न करें, यह तो उनकी इच्छा पर है (हम यह समझते हैं कि जब कोई संसद का सदस्य बन जाता है तो वह संसद में प्रवेश कर चुका, उसे अनुपस्थित होने का अधिकार नहीं है) सभासद जब संसद के सदस्य बन चुके तो उन्हें राष्ट्रधर्म के अनुकूल ही बोलना चाहिये। जो सदस्य संसद में बोलेगा ही नहीं या झूठ बोलेगा वह पाप करेगा। हम पिछली लोकसभा के राष्ट्र मण्डलीय खेलों 2जी के घोटाले और कोलगेट के घोटाले के प्रसंग में देख चुके है कि पिछली संसद में कैसे-कैसे छल हुए हैं।

लिफ्ट नं. 3 पर लिखा हुआ है-

'दया मैत्री च भूतेषु दानम् च मधुरा च वाक्। न ही दृशम् संवननं त्रिषुलोकेषु विद्यते।।'' महाभारत (विदुर नीति)

इसका भाव यह है कि प्राणी मात्र पशु-पक्षी मनुष्य आदि सबके प्रति दया, प्राणी मात्र से मित्रता, मधुर वचन और दान देने की प्रवृत्ति (केवल धन दान नहीं या भूमिदान ही नहीं, बल्कि श्रमदान, विद्यमान आदि) संसार में दुर्लभ हैं। इस सूक्ति का यह आशय है कि सभासद्, जनप्रतिनिधि इन मानव गुणों से अपने को परिपूर्ण बनाए रखे।

लिफ्ट क्रमांक चार पर शासक के राजधर्म पालन का मार्गदर्शन करने वाला शुक्रनीति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है- **सर्वदा स्यान्नृपः प्राज्ञः, स्वमते न कदाचन। सभ्याधिकारिप्रकृति-सभासत्सुमते स्थितः।।**शुक्रनीतिः (2/3)

इसका आशय यह है कि हमारी कार्यपालिका, प्रधानमंत्री और उनके मंत्रिमण्डल के सदस्य विद्वान् हों, किन्तु अपनी बात पर हठपूर्वक अड़े न रहें। उन्हें सभासदों के विचार और परामर्श से निर्णय लेना उचित है।

संसद भवन के इन संदेशों के परिप्रेक्ष्य में हमारा हदय उन अपने पूर्व पुरुषों की सूझ-बूझ पर श्रद्धा से भर उठता है। आज के संसद सदस्यों के अनेक बार अनुचित आचरणों से और मंत्रिमण्डलीय अनुचित निर्णयों को देखते हुये इन संदेशों का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। -**''ईशावास्यम्''**

पी-30, कालिन्दी हाऊसिंग स्टेट, कोलकाता-7000089

।। ओ३म्।।

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद

गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404

फोन - 0134-416073, 09719263983 (व्यवसायिक)

पृष्ठ 3 का शेष

चमत्कार में विश्वास अन्धविश्वास की उत्पत्ति का मूल है। आस्तिक समाज में मुस्लमान पैगम्बरों की चमत्कार की कहानियों में अधिक विश्वास रखते हैं, ईसाई समाज में ईसा मसीह और संतों के नाम पर चमत्कार की दुकानें चलाई जाती हैं। हिन्दू समाज में चमत्कार पुराणों में लिखी देवी-देवताओं की कहानियों से लेकर गुरुडम की दुकानों तक फल फूल रहा हैं। इन सभी का यह मानना है कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में इस दावे की परीक्षा करते हुए लिखते हैं कि अगर ईश्वर सब कुछ कर सकता है तो क्या ईश्वर अपने आपको मार भी सकता है? क्या ईश्वर अपने जैसा एक और ईश्वर बना सकता है जिसके गुण-कर्म और स्वाभाव उसी के समान हों। इसका उत्तर स्पष्ट है नहीं। फिर ईश्वर सब कुछ कैसे कर सकता हैं? इस शंका का समाधान यह हैं की जो जो कार्य ईश्वर के हैं जैसे सृष्टि की उत्पत्ति,पालन-पोषण,प्रलय, मनुष्य आदि का जन्म-मरण, पाप-पुण्य का फल देना आदि कार्य करने में ईश्वर स्वयं सक्षम हैं उन्हें किसी की आवश्यकता नहीं है। नास्तिक लोग आस्तिकों की चमत्कार के दावों की परीक्षा लेते हुए कहते हैं कि सृष्टि को नियमित मानते हो अथवा अनियमित। चमत्कार नियमों का उल्लंघन है। अगर ईश्वर की बनाई सृष्टि को अनियमित मानते हो तो उसे बनाने वाले ईश्वर को भी अनियमित मानना पड़ेगा। जोकि असंभव है। इसलिए चमत्कार को मनुष्य के मन की स्वार्थवश कल्पना मानना सत्य को मानने के समान है न इससे ईश्वर का नियमित होने का खंडन होगा और न ही अन्धविश्वास को बढ़ावा मिलेगा।

नास्तिकता को बढ़ावा देने में एक बड़ा दोष अभिमान का भी है। भौतिक जगत में मनुष्य ने जितनी भी वैज्ञानिक उन्नति की हैं उस पर वह अभिमान करने लगता है और इस अभिमान के कारण अपने आपको जगत की सबसे बड़ी सत्ता समझने लगता है। एक उदाहरण लीजिये सभी यह मानते हैं की न्यूटन ने Gravitation अर्थात् गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की थी। क्या न्यूटन से पहले गुरुत्वाकर्षण की शक्ति नहीं थी? थी, मगर मनुष्य को उसका ज्ञान नहीं था अर्थात् न्यूटन ने केवल अपनी अल्पज्ञता को दूर किया था और इसी क्रिया को अविष्कार कहा जाता है। सत्य यह है कि जितनी भी भौतिक वैज्ञानिक उन्नति हैं वह अपनी अलपज्ञता को दूर करना है। मनुष्य चाहे कितनी भी उन्नति क्यों न कर ले वह ज्ञान की सीमा को कभी प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि एक तो मनुष्य की शक्तियां सीमित हैं जबकि ज्ञान की असीमित हैं दूसरी असीमित ज्ञान का ज्ञाता केवल एक ही है और वो है ईश्वर जिनमें न केवल वो ज्ञान भी पूर्ण है जो केवल मानव के लिए है अपितु वह ज्ञान भी है जो मानव से परत केवल ईश्वर के लिए है।

स्वयं न्यूटन की इस सन्दर्भ में धारणा कितनी प्रासंगिक है कि -

"I do not know what I may appear to the world, but to myself I seem to have been only like a boy playing on the sea-shore, and diverting myself in now and then finding a smoother pebble or a prettier shell than ordinary, whilst the great ocean of truth lay all undiscovered before me.

न्यूटन ने हमारी अवधारणा का समर्थन कर अपनी निष्पक्षता का परिचय दिया है।

अब प्रश्न यह है कि धर्म और विज्ञान में क्या सम्बन्ध है और क्योंकि नास्तिक लोगों का यह मत है की धर्म और विज्ञान एक दूसरे के शत्रु हैं। नास्तिक लोगों की इस सोच का मुख्य कारण यूरोप के इतिहास में चर्च द्वारा बाइबिल के मान्यताओं पर वैज्ञानिकों द्वारा शंका करना और उनकी आवाज को सख्ती से दबा देना था। उदाहरण के लिए गैलिलियो को इसलिए मार डाला गया क्योंकि उसने कहा था की पृथ्वी सूर्य के चारों ओर भ्रमण करती है जबकि चर्च की मान्यता इसके विपरीत थी। चर्च ने वैज्ञानिकों का विरोध आरम्भ कर दिया और उन्हें सत्य को त्यागकर जो बाइबिल में लिखा था उसे मानने को मजबूर किया और न मानने वालो को दण्डित किया गया। इस विरोध का यह परिणाम निकला कि यूरोप से निकलने वाले वैज्ञानिक चर्च को अर्थात् धर्म को विज्ञान का शत्रु मानने लगे और उन्होंने ईश्वर की सत्ता को नकार दिया। दोष चर्च के अधिकारियों का था नाम ईश्वर का लगाया गया। यह विचार परम्परा रूप में चलता आ रहा है और इस कारण से वैज्ञानिक अपने आपको नास्तिक कहते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि धर्म और विज्ञान में क्या सम्बन्ध है? इसका उत्तर है कि "Religion and Science are not against each other but they are allies to each other" अर्थात् धर्म और एक दूसरे के विरोधी नहीं अपितु सहयोगी हैं। जैसे विज्ञान यह बताता है कि जगत कैसे बना है जबकि धर्म यह बताता हैं की जगत क्यों बना है। जैसे मनुष्य का जन्म कैसे हुआ यह विज्ञान बताता है जबकि मनुष्य का जन्म क्यों हुआ यह धर्म बताता है।

भौतिक विज्ञान के लिए आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान करना असंभव है मगर इनका समाधान धर्म द्वारा ही संभव है। धर्म और विज्ञान दोनों एक दूसरे के सहयोगी हैं और इसी तथ्य को आइंस्टीन ने सुन्दर शब्दों में इस प्रकार से कहा है "Science without religion is a lame and religion without science is blind"

विज्ञान धर्म के मार्गदर्शन के बिना अधूरा है और सत्य धर्म विज्ञान के अनुकूल है, अन्धविश्वास अवैज्ञानिक होने के कारण त्याग करने योग्य है।

एक कुतर्क यह भी दिया जाता है कि अगर ईश्वर है तो उन्हें वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध करके दिखाए। इसका समाधान वायु के अतिरिक्त मन, बुद्धि, सुख, दुःख, गर्मी, सर्दी, काल, दिशा, आकाश ये सभी निराकार हैं। क्या ये सभी वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध होते हैं? नहीं। परन्तु फिर भी इनका अस्तित्व माना जाता है फिर केवल ईश्वर को लेकर यह शंका उठाना नास्तिकता का समर्थन करने वाले की निष्पक्षता पर प्रश्न उठाता है। सत्य यह है कि वैज्ञानिक प्रयोगों से ईश्वर की सत्ता को सिद्ध न कर पाना आधुनिक विज्ञान की कमी है जबकि आध्यात्मिक वैज्ञानिक जिन्हें हम ऋषि कहते हैं चिरकाल से निराकार ईश्वर को न केवल अपनी अंतरात्मा में अनुभव करते आ रहे हैं अपितु जगत के कण कण में भी विद्यमान पाते हैं।

दंगे, युद्ध, उपद्रव आदि का दोष ईश्वर को देना एक और मूर्खता है। यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि दंगे, उपद्रव आदि मजहब या मत-मतान्तर आदि को मानने वालों के स्वार्थ के कारण होता है न कि धर्म के कारण होता है। एक उदाहरण लीजिये १९४७ से पहले हमारे देश में अनेक दंगे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच में हुए थे। इन दंगों का मुख्य कारण यह बताया जाता था कि हिन्दुओं के धार्मिक जुलूस के मस्जिद के सामने से निकलने से मुसलमानों की नमाज़ में विघ्न पड़ गया जिसके कारण यह दंगे हुए। मेरा स्पष्ट प्रश्न है कि जो व्यक्ति ईश्वर की उपासना या नमाज में लीन होगा उसके सामने चाहे बारात भी क्यों न निकल जाये उसे मालूम ही नहीं चलेगा परन्तु जो व्यक्ति यह बाट जो रहा हो कि कब हिन्दुओं का जुलूस आये कब हम नमाज आरम्भ करें और कब दंगा हो तो इसका दोष ईश्वर को देना कहा तक उचित है।

संसार में जितनी भी हिंसा ईश्वर के नाम पर होती है उसका मूल कारण स्वार्थ है नाकि धर्म है।

5. शंका- ईश्वर में विश्वास रखने के क्या लाभ हैं?

समाधान- ईश्वर में विश्वास रखने के निम्नलिखित लाभ हैं -

१. आदर्श शक्ति में विश्वास से जीवन में दिशा निर्धारण होता है।

२. सर्वव्यापक एवं निराकार ईश्वर में विश्वास से पापों से मुक्ति मिलती है।

३. ज्ञान के उत्पत्तिकर्ता में विश्वास से ज्ञान प्राप्ति का संकल्प बना रहता है।

४. सृष्टि के रचनाकर्ता में विश्वास से ईश्वर की रचना से प्रेम बढ़ता है।

५. अभयता, आत्मबल में वृद्धि, सत्य पथ का अनुगामी बनना, मृत्यु के भय से मुक्ति, परमानन्द सुख की प्राप्ति, आध्यात्मिक उन्नति, आत्मिक शांति की प्राप्ति, सदाचारी जीवन आदि गुण की आस्तिकता से प्राप्ति होती है।

6. स्वार्थ, पापकर्म, अत्याचार, दुःख, राग, द्वेष, इर्ष्या, अहंकार आदि दुर्गुणों से मुक्ति मिलती है।

आस्तिकता का सबसे बड़ा लाभ एक आदर्श शक्ति में विश्वास होता है। एक उदाहरण लीजिये कोई भी छात्र अपनी कक्षा के सबसे अधिक अंक लाने वाले अथवा अन्य गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने वाले छात्र का अनुसरण करने का प्रयास करता है क्योंकि उसका यह विश्वास है कि वह आदर्श है एवं हमें उन जैसा बनना चाहिए। यही नियम समाज के मनुष्यों पर भी लागू चिरकाल होता है। वे समाज के सबसे प्रबुद्ध, सबसे गुणी, सबसे प्रभावशाली व्यक्ति का अनुसरण करते हैं। जीव अल्पज्ञ है, ईश्वर सर्वज्ञ है। जीव कितना भी आदर्श क्यों न हो, कितना भी गुणी क्यों न हो परन्तु कोई न कोई कमी उसमें रह ही जाती है, उससे इतने बड़े जीवन में कोई न कोई गलती हो सकती है। जबकि ईश्वर में कमी या गलती की कोई सम्भावना नहीं है क्योंकि ईश्वर पूर्ण, सर्वज्ञ एवं त्रुटि रहित है। जैसा आप अनुसरण करेंगे वैसा आपके ऊपर प्रभाव पड़ेगा। फिर एक ऐसी सत्ता में विश्वास करने में अनेक लाभ हैं जो सबसे आदर्शवान है और उसी शक्ति को ईश्वर कहते हैं। संक्षेप में ईश्वर में विश्वास से एक आदर्श शक्ति में विश्वास बनता है और उस आदर्श शक्ति के विश्वास से उसके समान गुणों के विकास करने का अवसर मनुष्यों को मिलता है। बिना आदर्श शक्ति में विश्वास के मनुष्य इधर उधर भटकता रहता है और पाप-पुण्य में भेद की कमी के चलते जीवन का नाश कर लेता है। इसलिए आस्तिकता मनुष्य का मार्गदर्शन करती है बशर्ते की मनुष्य को ईश्वर के आदर्श गुणों से परिचय अवश्य होना चाहिए।

- शेष अगले अंक में

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वर की आवश्यकता
आर्य कन्या, ब्राह्मण गौत्र पाराशर 25 वर्ष, 5'5'' वजन 50 किलो, रंग गोरा, सुन्दर सुशील, एम.सी.ए., एम.एन.सी. में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद का कार्यानुभव पिता हरियाणा राज्य विभाग में लेखाधिकारी, माता बी.ए.बी.एड. घरेलू, भाई बी. टेक (अन्तिम वर्ष) हेतु सुयोग्य, सुन्दर सुशील, कार्य नियुक्त, आर्य वर चाहिए। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें
दिनेश कुमार आर्य, फरीदाबाद शहर
मो. 09968288806, 9868884665
Email : aryadk2013@yahoo.in

आर्यसमाज वर्धा (म.प्र.) में पंच दिवसीय वेद कथा सम्पन्न

21 से 25 मई 2014 तक प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी के प्रवचन एवं पं.कुलदीप आर्य जी (बिजनौर) भजन हुए। आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी वेद के किसी एक मंत्र का सहाय लेकर उसकी व्याख्या करते थे। वेद मंत्रो के अर्थ अनेक प्रकार से किये जा सकते है, परन्तु आध्यात्मिक अर्थों पर विचार करने से ईश्वर के प्रति श्रद्धा में वृद्धि होती है।

अंतिम दिन ५८ दम्पति २१ यज्ञ वेदियों में पूर्णाहुति दी। कुछ कन्याओं को आचार्य जी की प्रेरणा से अलियाबाद के कन्या गुरुकुल आर्ष शोध संस्थान में शास्त्रों के अध्ययनार्थ भेजने की व्यवस्था की गई। मेहरबान सिंह आर्य जी ने अपने आर्य विद्यालय में विद्वानों के रुकने की व्यवस्था की थी।

- रामकृष्ण आर्य, मन्त्री

विवाह संयोग सेवा आरम्भ

आर्यसमाज भोगल (जंगपुरा) 407, हॉस्पीटल रोड, भोगल (जंगपुरा), नई दिल्ली-14 में वैदिक पद्धति के अनुसार विवाह कराने एवं विवाह योग्य युवक युवतियों के मिलान हेतु संयोग सेवा आरम्भ हो गई है। यह सेवा प्रतिदिन प्रात: 10 से 12 बजे तथा सायंकाल 4 से 6 बजे तक उपलब्ध रहेगी।

समस्त महानुभावों से निवेदन है कि आपने बच्चों के लिए सुयोग्य वर/वधू पाने के लिए पंजीकरण कराएं।

- पन्नालाल खुराना, प्रधान

अब यू-ट्यूब पर देखें आर्यसमाज के कार्यक्रम

अब आप आर्य समाज के सभी कार्यक्रमों के वीडियोज को youtube पर भी देख सकते हैं इन वीडियोज को देखने के लिए आप www.youtube.com/user/thearyasamaj इस पर जाएं। आप भी अपनी आर्यसमाज वीडियोज youtube पर अपलॉड करें। अधिक जानकारी के लिए श्री नितिन वर्मा से 011-23360150, 23365959 मो. 8802679859 पर सम्पर्क करें।

प्राथमिक पुरोहित प्रशिक्षण

असम आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज गुवाहाटी में १४ जुलाई से साप्ताहिक प्राथमिक पुरोहित प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। गुवाहाटी के आस-पास के क्षेत्र में स्थित आर्यसमाजों से लगभग 40 प्रतिभागियों का शिविर में भाग लेना अपेक्षित है । सभा के अध्यक्ष श्री आर. के. सिंघल ने बताया कि सभी प्रतिभागियों का उपनयन संस्कार कर वैदिक संस्कृति और वैदिक संस्कार के बारे में जानकारी देने के लिए एक लघु शैक्षणिक सत्र चलाया जाएगा जिससे प्रतिभागी अपने अपने कार्य क्षेत्र में जाकर समाज को वैदिक संस्कृति और संस्कार के अनुरूप मूल्यों का प्रसार करें। - ***मन्त्री***

सत्यार्थ प्रकाश कक्षाएं सम्पन्न

आर्यसमाज गोविन्दपुरी में 2 से 7 जून तक सत्यार्थ प्रकाश के पाठन की विशेष कक्षायें आचार्य श्री इन्द्रदेव जी, अधिष्ठाता वेद-प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली के द्वारा आयोजित की गई। प्रतिदिन 35-40 पुरुष/महिलाओं ने भाग लिया। यह कार्य स्त्री समाज के सहयोग से सम्पन्न हुआ। - ***सरोज मदान, प्रचार मन्त्री***

न्यायदर्शन अध्यापन समापन समारोह सम्पन्न

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में गत वर्ष कृष्णजन्माष्टमी से आरम्भ किये गये न्यायदर्शन अध्यापन सत्र का समापन 15 जून 2014 को हुआ। बाईस प्रबुद्ध ब्रह्मचारियों व कुछ अन्य व्यक्तियों को आचार्य सत्यजित् जी दर्शनाचार्य द्वारा न्यायदर्शन का अध्यापन वात्स्यायन भाष्य सहित कराया गया। साथ इतने व्यक्तियों को न्यायदर्शन अध्यापन का कार्य अभी तक देखने-सुनने में नहीं आया। रविवार, 15 जून 2014 को न्यायदर्शन पढ़ चुके छात्रों को उनकी उपलब्धि के अनुरूप 11 ब्रह्मचारियों को 'न्यायाचार्य', 4 को 'न्याय-विशारद', 7 को 'न्याय-प्राज्ञ' की उपाधि-प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

इस अवसर पर पू.स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य आनन्दप्रकाश जी, आचार्य सत्येन्द्र जी, वानप्रस्थी ओम्मुनि जी (मन्त्री, परोपकारिणी सभा), श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल (उपप्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्र. सभा), श्री रणजीतसिंह जी परमार (प्रधान-सौराष्ट्र आर्य प्र. सभा), श्री सुरेश जी चावड़ा, श्री सत्यनारायण जुईवाला, श्री सुभाष जी नवाल, श्री मनसुखभाई जी वेलाणी आदि महानुभावों की गरिमामय उपस्थिति रही। न्यायदर्शन के बाद अब 12 जुलाई 2014 से 11 उपनिषद् तथा वेदान्त दर्शन का अध्यापन कराया जायेगा, जो लगभग 8 मास तक चलेगा। सम्पर्क करें - ***मो. नं. 09427059550***

आर्य वधू चाहिए

त्यागी ब्राह्मण, भारद्वाज गौत्र, 31 वर्ष, 5'11'', 72 किलो, गोरा, सुन्दर, एम.सी.ए., सांडियागो अमेरिका में वरिष्ट सोफ्टवेयर इंजीनियर वेतन 101000 डॉलर वार्षिक, एक बड़ा भाई विवाहित, पिता सेवानिवृत्त वैंक अधिकारी, माता गृहिणी, दिल्ली में स्थाई निवास, हेतु गोरी, सुन्दर, लम्बी, प्रो. योग्यता प्राप्त, शाकाहारी, आर्य कन्या चाहिए। कोई जाति बन्धन नहीं। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें-

ईमेल : seelenheil0@gmail.com

बिहार प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में **आर्य महासम्मेलन-2014 पटना** का आयोजन **विद्युत बोर्ड कॉलोनी मैदान शास्त्री नगर, पटना** में दिनांक **8, 9, 10 एवं 11 अक्टूबर 2014** को किया जा रहा है।

आर्यों के इस महासम्मेलन में सम्पूर्ण बिहार के कोने-कोने से बड़ी संख्या में लोग पधारेगें, वहीं देश-विदेश के विभिन्न आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि भी भाग लेकर वर्तमान परिस्थिति में एकता का संकल्प लेंगे। राष्ट्रीय सन्दर्भो में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका एवं संगठन में ऊर्जा के संचार के उपायों पर चर्चा करेंगें। यह महासम्मेलन आर्य जनों के एकत्रिकरण का शुभ अवसर लेकर आया है।

इस महासम्मेलन के अवसर पर राजधानी पटना में विशाल शोभा यात्रा हमारे आकर्षण का केन्द्र होगा। बिहार की आर्यसमाजों के संक्षिप्त इतिहास एवं समर्पित आर्य नेताओं के फोटो से युक्त एक सुन्दर स्मारिका भी प्रकाशित की जायेगी। आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान, कार्यकर्ताओं एवं 80 वर्ष से अधिक आयु के त्यागी तपस्वी आर्यों को सम्मानित करने की भी योजना है। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में निस्वार्थ भूमिका निभाने वालों का भी हम सम्मान करेंगे। वैदिक मंत्रों से यज्ञ के साथ विविध सम्मेलनों का भी आयोजन किया जायेगा।

सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रत्येक आर्यजन के आवास एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था आयोजन समिति की ओर से धर्मशालाओं, होटलों एवं विद्यालयों में की जा रही है। प्रत्येक अतिथि को अनुकूल वातावरण एवं आतिथ्य देना हमारा कर्त्तव्य है। इस सम्मेलन की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं पर लगभग 50-60 लाख रुपये व्यय का अनुमान है जो आप जैसे दानी महानुभावों तथा आपकी सहयोगी संस्थाओं के विशिष्ट सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। सम्मेलन की व्यवस्थाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: आपसे निवेदन है कि आप अधिकारिक राशि का आर्थिक सहयोग प्रदान करके कृतार्थ करें। कृपया अपनी दान राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट '**आर्य महासम्मेलन-2014, पटना**' के नाम सम्मेलन कार्यालय को भिजवाकर पुण्य के भागी बनें। सम्मेलन को सफल, यादगार एवं उपयोगी बनाने के लिए आप अपने सुझाव भी भेजें।

निवेदक

गंगा प्रसाद	**रमेन्द्र कुमार गुप्ता**	**सत्यदेव प्रसाद गुप्ता**
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज कोटा द्वारा श्री पूनम सूरी का सम्मान

आर्य समाज का प्रचार कर आमजन को यज्ञ के महत्व की जानकारी तथा उन्हें यज्ञ कार्यक्रमों से जोड़ें। उक्त विचार डीएवी कॉलेज प्रबन्ध समिति के चेयरमैन श्री पूनम सूरी ने डीएवी स्कूल में आर्य समाज कोटा जिला सभा के प्रतिनिधि मण्डल से शिष्टाचार भेंट में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि डीएवी विद्यालयों में आर्य संस्कारों को बढ़ावा देने के लिए डीएवी स्कूलों के सभी प्राचार्यो एवं अध्यापकों को यज्ञ करने का प्रशिक्षण दिया गया है। प्रतिनिधि मंडल में शामिल जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जेएस दुबे, पूर्व उप प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक, डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता ने डीएवी स्कूल में आर्य शिरोमणि पूनम सूरी को राजस्थानी साफा, मोतियों माला एवं पटका पहनाकर ओ३म का स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

- अर्जुनदेव चड्ढा, जिला प्रधान

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा (राजस्थान)

प्रधान	: श्री जे. एस. दुबे
मन्त्री	: श्री राकेश चड्ढा
कोषाध्यक्ष	: श्री कौशल रस्तोगी

अपना सर्वस्व कार्य हिन्दी में ही करें

शोक समाचार

श्री नरेन्द्र नारंग को मातृशोक

आर्य समाज पूर्वी कैलाश के यशस्वी प्रधान एवं सभा की अन्तरंग सभा के सदस्य श्री नरेन्द्र कुमार नारंग जी की माताजी श्रीमती सरस्वती आर्या जी का 98 वर्ष की अवस्था में दिनांक 1 जुलाई, 2014 को अकस्मात देहावसान हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे अपने पीछे तीन पुत्रों एवं दो पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 3 जुलाई को सम्पन्न हुई जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री राजीव आर्य जी के साथ-साथ उनके पारिवारिक जनों एवं आस-पास की अनेक आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 7 जुलाई, 2014 से रविवार 13 जुलाई, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10 /11 जुलाई, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 9 जुलाई, 2014

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 2 का शेष

अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और विश्वासघातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है। पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान–पान, वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे अधर्मी नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है। इस रूप में भी ईश्वर अधर्मी को हराता है। अतः पापी व्यक्ति सदा आनन्द से रहित रहता है व बाह्य साधन भी उसके कालान्तर में छीन लिये जाते हैं। यह उसकी हार है।

(ख) सूर्य को अन्तरिक्ष का पुत्र कहते है क्योंकि जैसे पुत्र माता के शरीर में उत्पन्न होता है उसी प्रकार सूर्य अन्तरिक्ष में उत्पन्न होता है।

(ग) ईश्वर 'आध्रः' है क्योंकि – (1) ईश्वर अनाथ का नाथ है, असहाय का रक्षक है। ईश्वर वेदादि शास्त्रों के माध्यम से व आनन्द, उत्साहादि के द्वारा मनुष्यों को प्रेरणा देता है कि अनाथों, वृद्धों, रोगियों की सेवा में अपना, तन, मन, धन लगाओ। (2) संसार में जिसको न्याय नहीं मिलता जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं होती ईश्वर के दरबार में उसे पूरा न्याय मिलता है। ईश्वर उसकी क्षति की पूर्ति कर देता है। अथवा संसार में मनुष्य को जिन अच्छे कर्मों का फल राजादि अधिकारी व्यक्ति प्रदान नहीं करता ईश्वर उसको उन अच्छे कर्मों का फल अवश्य देता है। (3) सब प्राणियों के द्वारा सब ओर से धारण किया जाता है कोई भी प्राणी ईश्वर के नियमों, व्यवस्थाओं की सहायता के बिना जीवित नहीं रह सकता।

(घ) ईश्वर की मनुष्यों को आज्ञा है कि हे मनुष्यों! मैंने सूर्यादि जगत् को उत्पन्न किया है व धारण किया है, इसलिये तुम मेरी ही उपासना किया करो तथा मेरी आज्ञा का पालन किया करो।

–: संकल्प व संपादनः–
स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक (उपाध्याय)
दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा.-सागपुर,
जि.-साबरकांठा (गुजरात)- 383307

महाशय चूनीलाल सरस्वती बाल मन्दिर हरिनगर का पूर्व विद्यार्थी UPSE (IAS) परीक्षा में टॉपर

महाशय धर्मपाल जी के पूज्य पिताजी महाशय चूनीलाल के नाम से चलने वाले विद्यालय महाशय चूनीलाल सरस्वती बाल मंदिर (वरिष्ठ विद्यालय) एल ब्लॉक, हरिनगर नई दिल्ली के पूर्व छात्र मुनीश शर्मा ने UPSC की IAS परीक्षा में भारत में दूसरा स्थान व दिल्ली में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मुनीश ने इसी विद्यालय से 12वी कक्षा तक शिक्षा ग्रहण की। यह अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी मां श्रीमती मधु शर्मा (जो इसी विद्यालय में अध्यापिका है) व अपने अध्यापकों को देते हैं। मुझे अपने पूर्व छात्र की इस अपार सफलता पर गर्व है।

–गोविन्दराम अग्रवाल,
से.नि.प्रधानाचार्य
(8130892282)

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

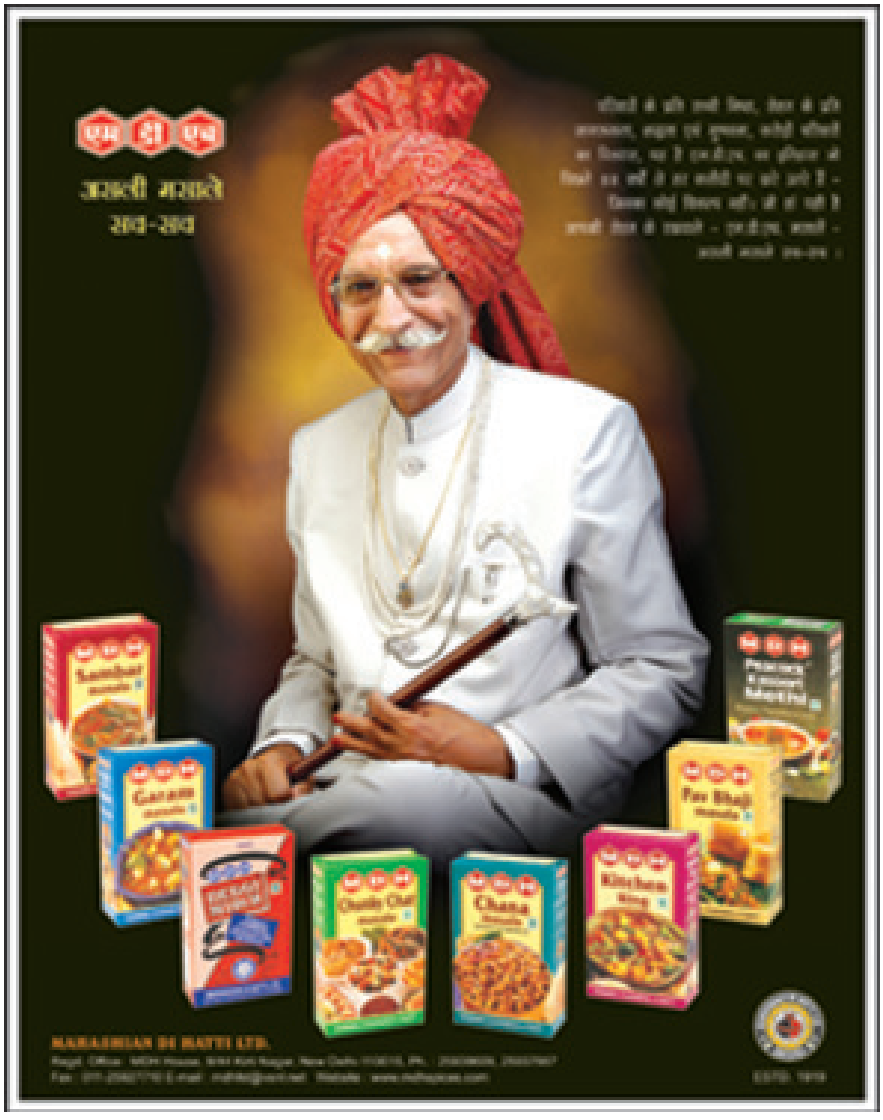

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह